अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : दसवीं– जैन सिद्धान्त प्रभाकर–उत्तरार्द्ध (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) प्राकृत भाषा में वचन होते हैं-
(क) 3 (ख) 2
(ग) 4 (घ) नहीं (ख)

(b) प्राकृत भाषा में कारक होते हैं-
(क) 6 (ख) 7
(ग) 8 (घ) 4 (क)

(c) जैन दर्शन में कार्य की उत्पत्ति के कितने कारण बताये हैं-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 5 (घ) 2 (ग)

(d) प्रथम दो निकायों में कितनी लेश्या पाई जाती हैं-
(क) 5 (ख) 3
(ग) 6 (घ) 4 (घ)

(e) असन्नी खेचर की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है-
(क) 72 हजार वर्ष (ख) 84 हजार वर्ष
(ग) 1 करोड़ पूर्व (घ) 1 पल्योपम (क)

(f) जम्बू द्वीप के सात क्षेत्रों का विभाजन किसके आधार से होता है-
(क) नदी (ख) पर्वत
(ग) समुद्र (घ) द्वीप (ख)

(g) तत्त्वार्थ सूत्र के चतुर्थ अध्याय में मुख्यता से किसका वर्णन है-
(क) नारकी (ख) तिर्यञ्च
(ग) देवता (घ) मनुष्य (ग)

(h) भद्रनन्दी कुमार किस नगर का निवासी था-
(क) राजगृह (ख) हस्तिनापुर
(ग) हस्तिशीर्ष (घ) उषभपुर (घ)

(i) सन्तों को निर्दोष आहर बहराने से साधक स्वयं भी समाधि को प्राप्त करता है, यह वाक्य किसमें है-
(क) भगवती 7/1 में (ख) भगवती 8/6 में
(ग) उत्तराध्ययन में (घ) दशवैकालिक में (क)

(j) मध्यम अवगाहना वाले संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य में कितने उपयोग पाये जाते हैं-
(क) 12 (ख) 10
(ग) 06 (घ) 08 (ख)

(k) केवलज्ञानी मनुष्य की अवगाहना चतुःस्थानपतित किस अपेक्षा से कही गई है-
(क) उपयोग (ख) लेश्या
(ग) केवली समुद्घात (घ) मारणान्तिक समुद्घात (ग)

(l) चक्षुदर्शन की काय स्थिति कितनी है-
(क) 1000 सागर झाझेरी (ख) 100 सागर
(ग) 33 सागर (घ) 1 सागर (क)

(m) युगलिक मनुष्यों की उत्कृष्ट अवगाहना कितनी होती है-
(क) 3 गाउ (ख) 4 गाउ
(ग) 1 गाउ (घ) 5 गाउ (क)

(n) उत्कृष्ट अवधिज्ञान होने पर अन्तर्मुहूर्त्त में कौनसा ज्ञान प्राप्त होने की नियमा है-
(क) मनःपर्याय ज्ञान (ख) केवल ज्ञान
(ग) विपुल मति (घ) अप्रतिपाति अवधिज्ञान (ख)

(o) जघन्य गुण काले वर्ण वाला मनुष्य जघन्य गुण काले वर्ण वाले मनुष्य से अवगाहना में कैसा होता है-
(क) द्विस्थानपतित (ख) त्रिस्थानपतित
(ग) चतुस्थानपतित (घ) षट्स्थानपतित (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(a) तित्थयरा सव्वं जाणइ। (नहीं)

(b) जैन दर्शन की मौलिक विशेषता है कि उसने हर व्यक्ति को परमात्मा बनने की स्वतन्त्रता दी। (हाँ)

(c) पाँचों द्रव्य नित्य, अवस्थित और रूपी है। (नहीं)

(d) धर्म, अधर्म , एकजीव व लोकाकाश इन चारों के प्रदेश समान होते हैं। (हाँ)

(e) सूक्ष्म जीव लोक के एक प्रदेश पर रह सकता है। (नहीं)

(f) एक साथ पाँचों ज्ञान किसी में नही होते हैं। (हाँ)

(g) गुणों के समान होने पर बंध होता है। (नहीं)

(h) चतुरिन्द्रिय काय में जीव उत्कृष्ट असंख्यात काल तक रह सकता है। (नहीं)

(i) महासागर के लिए गाथा में ''अण्णवं महं'' शब्द आया है। (हाँ)

(j) आर्यत्व पाकर भी उत्तम धर्म की प्राप्ति क्रमशः दुर्लभ है। क्या यह क्रम सही है। (नहीं)

(k) एक बार आराधक बनने के बाद वह जीव विराधक बन सकता है। (हाँ)

(l) जीव पज्जवा में एक स्थानपतित का अर्थ संख्यात भाग हीन संख्यात भाग अधिक होता है।(नहीं)

(m) सातवीं नरक में स्थिति की अपेक्षा द्विस्थानपतित स्थान बनता है। (हाँ)

(n) उत्पत्ति के प्रथम समय में जीव की जो अवगाहना होती है, वह जघन्य कहलाती है। (हाँ)

(o) जघन्य अवधिज्ञान वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अवधिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित होता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(a)	अपादान	(क) तोड़ दो	पंचमी
(b)	वैतरणी	(ख) लटकते हुए	भवनपति
(c)	सातवीं नरक	(ग) 180 भेद	5 नरकावास
(d)	कल्पोपपन्न	(घ) वुड्ढा	12 भेद
(e)	खिव	(च) 246	फैंकना
(f)	मरुत	(छ) झाड़ दे	लोकान्तिक देव
(g)	अवसोहिय	(ज) जल्दी करो	छोड़कर
(h)	अकलेवरसेणी	(झ) पंचमी	क्षपक श्रेणी
(i)	वोच्छिंद	(य) भवनपति	तोड़ दो
(j)	विहुणाहि	(य) 5 नरकावास	झाड़ दे
(k)	क्रियावादी	(ल) 12 भेद	180 भेद
(l)	विकलेन्द्रिय के अलावे	(व) फैंकना	246
(m)	अभितुर	(क्ष) लोकान्तिक देव	जल्दी करो
(n)	लंबमाणए	(त्र) छोड़कर	लटकते हुए
(o)	वसुहरा	(ज्ञ) क्षपक श्रेणी	वुड्ढा

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a)	मुझे हेमचन्द्राचार्य ने लिखा है।	सिद्ध हेम व्याकरण
(b)	मैं एक आत्मवादी दर्शन हूँ।	जैन दर्शन
(c)	मेरे कारण मनुष्य में आग्रह बुद्धि नहीं आती।	अनेकान्त
(d)	मेरे पास लोकान्तिक देवों का निवास है।	ब्रह्मलोक
(e)	मेरी उत्कृष्ट स्थिति दो सागरोपम है।	सोधर्म देवलोक
(f)	रात्रि समूह के बीत जाने पर मैं गिर जाता हूँ।	वृक्ष का पका पत्ता
(g)	मेरा विपाक गाढ़ होता है।	कर्म
(h)	आज मैं नहीं दिख रहा हूँ, जो दिख रहे हैं वे अनेक मत वाले हैं।	जिन
(i)	मैं पानी से लिप्त नहीं होता हूँ।	चन्द्रविकासी कमल
(j)	प्रथम बार सम्यग्दर्शन प्राप्त करने वाला मैं क्या कहलाता हूँ।	परीत संसारी
(k)	मेरे होने पर भी काया से आचरण होना दुर्लभ है।	धर्मश्रद्धा
(l)	मैं कण्टकाकीर्ण पथ को छोड़कर विशाल महापथ पर उतर आया हूँ।	गौतम
(m)	जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय को मैं प्राप्त नहीं होता हूँ।	अवधिज्ञान
(n)	मेरे अन्दर उत्पन्न हुआ जीव अधिक से अधिक सात या आठ जन्म तक वहाँ रहता है।	पंचेन्द्रियकाय
(o)	विषम मार्ग पर चलने वालों को पीछे मेरी तरह पछताना पड़ता है।	दुर्बल भारवाहक

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) ''वयं उज्जाणं गच्छामो'' का हिन्दी अर्थ लिखिए।

उ. हम सब उद्यान को जाते हैं।

(b) 'जिण' शब्द के सप्तमी विभक्ति के रूप लिखिए।

उ. जिणे, जिणम्मि, जिणेसु, जिणेसुं।

(c) जैन दर्शन के अनुसार आत्मा का स्वरूप क्या है ?

उ. आत्मा अमूर्त है, उपयोगमय चैतन्य स्वरूप है, अखण्ड है, अनन्त गुणों-पर्यायों से युक्त अभेद स्वरूप है।

(d) ज्ञानी के ज्ञान का सार क्या है ?

उ. वह किसी भी जीव की हिंसा न करें।

(e) काल द्रव्य को अप्रदेशी क्यों कहा गया है ?

उ. काल के सबसे सूक्ष्म अणु कालाणु कहलाते हैं, जो रत्न राशि के समान परस्पर स्वतन्त्र हैं। जीव के प्रदेशों तथा धर्म, अधर्म, आकाश आदि के प्रदेशों की तरह आपस में सम्बन्ध नहीं होते, समूह रूप में नहीं हो पाते।

(f) गुण किसे कहते हैं ?

उ. शक्ति विशेष को गुण कहते हैं।

(g) किन-किन बातों में ऊपर-ऊपर के देव हीन हैं ?

उ. गति, शरीर का परिमाण, परिग्रह और अभिमान, इन विषयों में ऊपर-ऊपर के देव हीन हैं।

(h) एवं भवसंसारे, संसरइ सुहासुहेहिं कम्मेहिं।

उ. जीवो पमायबहुलो, समयं गोयम! मा पमायए।। इस गाथा का भावार्थ लिखिए।

प्रमाद की अधिकता वाला जीव अपने पूर्वकृत शुभ-अशुभ कर्मो के कारण चतुर्गतिक जन्म-मरणरूप संसार में (अनन्तकाल तक सतत) परिभ्रमण करता रहता है। हे गौतम! समयमात्र का भी प्रमाद मत कर।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3 = (24)**

(a) संथारा मरण व आत्म-हत्या में कोई तीन प्रमुख अन्तर पाठ्य पुस्तक के आधार पर लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई तीन मान्य-

संथारा	आत्म-हत्या
समभाव व विवेकपूर्वक ग्रहण किया जाता है, जिससे आत्मबल बढ़ जाता है।	यह अज्ञान व मोह से ग्रसित विषम भावों में की जाती है, जिससे आत्मबल क्षीण हो जाता है।
देह का यथासमय घात होता है, पर आत्मघात नहीं होता।	देहघात के साथ आत्मघात (आत्मा की दुर्गति)भी होती है।
यह दण्डनीय कार्य नहीं। इसमें साधक शुद्ध और शुभ भावों में देह छोड़ता है।	यह दण्डनीय अपराध है। इसमें जीव अशुभ भावों में देह छोड़ता है।
यह प्रकट रूप से देवगुरु धर्म की साक्षी से, बड़ों की आज्ञा से, सबके समक्ष विधिपूर्वक ग्रहण किया जाता है।	यह छिपकर विवशता से किसी भी तरह कर ली जाती है
यह सद्गति का कारण है।	यह दुर्गति का कारण है।
इसमें सबके प्रति क्षमा व मैत्री भाव होता है।	इसमें किसी न किसी के प्रति मरने वाले का आक्रोश होता है।
आयुष्य का अन्त निकट जानकर जीवन की अंतिम घड़ियों में यह निर्मल भावों से ग्रहण किया जाता है।	यह कभी, किसी भी दशा में समस्याओं से घिरा हुआ, कलह में प्रवृत्त, आवेश आने पर कर ली जाती है।

(b) ऊपर-ऊपर के देवों में कौनसी बातें बढ़ती जाती है ?

उ. स्थिति, प्रभाव, सुख, द्युति, लेश्या, विशुद्धि, इन्द्रिय विषय और अवधिज्ञान का विषय ऊपर के देवों में क्रमशः वृद्धिगत होता है।

(c) चौसठ इन्द्र किस प्रकार होते हैं ?

उ. देवों की चारों निकायों के कुल 64 इन्द्र होते हैं। भवनपति के दक्षिण दिशा के 10, उत्तर दिशा के 10, ये कुल 20 इन्द्र हैं। व्यन्तर निकाय के उत्तर दिशा के 16 और दक्षिण दिशा के 16, ये 32

व्यन्तरों के इन्द्र हैं। ज्योतिषी के चन्द्र व सूर्य नामक दो इन्द्र हैं। वैमानिक के 10 इन्द्र हैं। इस प्रकार 20+32+2+10 = 64 इन्द्र हैं।

(d) चतुःस्थानपतित का क्या आशय है ?

उ. असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन, असंख्यात गुण हीन तथा असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक व असंख्यात गुण अधिक, ये सभी मिलकर चतुःस्थानपतित कहलाते हैं।

(e) जघन्य अवगाहना वाले पृथ्वीकाय की जघन्य अवगाहना वाले पृथ्वीकाय से तुलना कीजिए।

उ. जघन्य अवगाहना वाला पृथ्वीकाय का जीव, जघन्य अवगाहना वाले पृथ्वीकाय के जीव से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि बीस बोलों की पर्यायों की अपेक्षा तथा तीन उपयोग (दो अज्ञान, अचक्षुदर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(f) मध्यम स्थिति वाले मनुष्य की मध्यम स्थिति वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।

मध्यम स्थिति वाले मनुष्य मध्यम स्थिति वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा दस उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, केवलज्ञान-केवलदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है।

(g) सुखविपाक सूत्र से लेने योग्य कोई तीन प्रेरणाएँ पाठ्य पुस्तक के आधार पर लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई तीन मान्य

1.भव्य आत्माएँ अधिक समय तक भोगों में आसक्त नहीं रहती, किन्तु निमित्त मिलते ही भोगों का त्याग कर विरक्त बन जाती हैं।

2.यदि हम संयम-स्वीकार न कर सकें तो हमें श्रावक के व्रत अवश्य ही ग्रहण करने चाहिए।

3.दीक्षा-ग्रहणोपरान्त अपना समय निर्दोष-संयमाराधना एवं ज्ञान-ध्यान के चिन्तन-मनन में बिताना चाहिए।

4.सुपात्र-दान देने से सम्यक्त्व की प्राप्ति एवं संसार-परीत होता है। अतः सुपात्रदान का लक्ष्य रखना चाहिए।

5.मुनिराज के गोचरी पधारने पर शालीनता से विधिपूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

6.एषणा के 42 दोषों एवं गोचरी सम्बन्धी विवेक-व्यवहार का ज्ञान श्रावकों को भी रखना चाहिए।

सुपात्र दान देने में त्रैकालिक हर्ष होना चाहिए यथा— 1. दान देने के सुअवसर पर, सुसंयोग प्राप्त होने पर, 2. दान देते वक्त, 3.दान देकर निवृत्त हो जाने पर।

(h) चिच्चाण धणं च भारियं, पव्वइओ हि सि अणगारियं।

मा वंतं पुणो वि आविए, समयं गोयम! मा पमायए।। इस गाथा का भावार्थ लिखिए।

धन और पत्नी का परित्याग करके तू अनगारवृत्ति में प्रव्रजित हुआ है। अतः एक बार वमन किये हुए भोगों को पुनः मत पी, अर्थात् फिर सेवन मत कर। हे गौतम! तू समयमात्र का भी प्रमाद मत कर।

कक्षा : दसवीं – जैन सिद्धान्त प्रभाकर उत्तरार्द्ध (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) किसके बीतने पर वृक्ष का पत्ता गिर जाता है-
(क) दिन समूह (ख) रात्रि समूह
(ग) पक्ष समूह (घ) मास समूह (ख)

(b) 'विहुणाहि' शब्द का अर्थ है-
(क) झाड़ दे (ख) उतार दे
(ग) प्राप्त करें (घ) जाने दे (क)

(c) सुख-विपाक सूत्र के तीसरे अध्ययन का नाम है-
(क) जिनदास (ख) महाबल
(ग) सुजात (घ) वरदत्त (ग)

(d) सुदत्त अणगार गोचरी के लिए कब निकले-
(क) प्रथम प्रहर (ख) द्वितीय प्रहर
(ग) चतुर्थ प्रहर (घ) तृतीय प्रहर (घ)

(e) नरक में कितने प्रकार की वेदनाएँ भोगनी पड़ती हैं-
(क) 3 (ख) 2
(ग) 4 (घ) 5 (क)

(f) व्यन्तरों की उत्कृष्ट स्थिति होती है-
(क) 2 पल्योपम (ख) 3 पल्योपम
(ग) 1 पल्योपम (घ) एक सागर (ग)

(g) वर्तना, परिणाम, क्रिया आदि किसके उपकार हैं-
(क) जीव (ख) काल
(ग) आकाश (घ) पुद्गल (ख)

(h) किस थोकड़े में उत्पत्ति के प्रथम समय में चक्षुदर्शन माना है-
(क) जीव पज्जवा (ख) अजीव पज्जवा
(ग) उपयोग द्वार (घ) लघु दण्डक (क)

(i) पृथ्वीकाय के अलावे होते हैं-
(क) 25 (ख) 50
(ग) 100 (घ) 75 (घ)

(j) जैन दर्शन कैसा दर्शन है-
(क) आत्मवादी (ख) क्रियावादी
(ग) कर्मवादी (घ) अक्रियावादी (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) द्वीन्द्रिय काय में गया हुआ जीव असंख्यात काल तक वहाँ रह सकता है। (नहीं)
(b) अदीनशत्रु राजा कोणिक के समान भगवान के दर्शनार्थ गया। (हाँ)
(c) एक बार आराधक बनने के बाद जीव विराधक बन सकता है। (हाँ)
(d) सात नारकी के कुल आन्तरे 49 हैं। (नहीं)
(e) प्राकृत भाषा में 8 कारक होते हैं। (नहीं)
(f) बेइन्द्रिय,बेइन्द्रिय से अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थानपतित है। (हाँ)

(g) जघन्य अवधि दर्शन वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अवधिदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उपयोग की अपेक्षा चतुस्थानपतित है। (नहीं)

(h) युगलिक मनुष्यों में अवधिज्ञान नहीं होता है। (हाँ)

(i) ज्ञानी के ज्ञान का सार यही है कि वह ममता न रखे। (नहीं)

(j) उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य की स्थिति एकस्थानपतित होती है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	अकलेवरसेणि	(क) 20 इन्द्र	क्षपक क्षेणि
(b)	ब्रह्मचर्य पौषध	(ख) उद्यान	कुशील सेवन का त्याग
(c)	भवनपति	(ग) वररूचि	20 इन्द्र
(d)	मनुष्य	(घ) क्षपक क्षेणि	98 अलावे
(e)	2138	(च) कुशील सेवन का त्याग	कुल अलावे
(f)	तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(छ) असंख्यात	9 उपयोग
(g)	अनेकान्तवाद	(ज) 9 उपयोग	आधार शिला
(h)	आत्मप्रदेश	(झ) आधार शिला	असंख्यात
(i)	प्राकृत प्रकाश	(य) 98 अलावे	वररूचि
(j)	पुष्पकरंडक	(र) कुल अलावे	उद्यान

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मुझमें उत्पन्न हुआ जीव अधिकतम सात या आठ जन्म तक वहाँ रहता है।	पंचेन्द्रियकाय
(b)	सुबाहु कुमार का विवाह मेरी तरह हुआ था।	महाबल
(c)	सुख-विपाक सूत्र के आधार पर मेरे तीन भेद हैं।	सुपात्रदान
(d)	हम नित्य, अवस्थित और अरूपी हैं।	पाँचों द्रव्य
(e)	जीव के प्रदेश मेरे समान संकोच विस्तार वाले हैं।	दीपक
(f)	मेरे शासन में प्राकृत भाषा को राजभाषा होने का गौरव प्राप्त था।	अशोक
(g)	मेरी उत्कृष्ट स्थिति 22 हजार वर्ष है।	पृथ्वीकाय
(h)	मैं आत्मप्रदेशी को लोकव्यापी बना देता हूँ।	केवली समुद्घात
(i)	मेरी उत्कृष्ट स्थिति पल्योपम का चतुर्थ भाग है।	तारा
(j)	हमारी जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति 8 सागरोपम है।	लौकान्तिक देव

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए:- **12x2 = (24)**

(a) सारइयं का अर्थ लिखिए ?

उ. शरद ऋतु सम्बन्धी

(b) भवन व आवास में क्या अन्तर है ?

उ. नाना प्रकार के रत्नों की प्रभा से उद्दीप्त रहने वाले शरीर प्रमाण के अनुसार बने हुए महामण्डप आवास कहलाते हैं। बाहर से गोल, भीतर से चौकोर और नीचे के भाग में कमल कर्णिका के जैसे बने हुए मकानों को भवन कहते हैं। आवास बड़े मण्डप जैसे होते हैं और भवन नगर के समान होते हैं।

(c) 9 लौकान्तिक देवों के नाम लिखिए।

उ. सारस्वत, आदित्य, वह्नि, वरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध, मरुत और अरिष्ट ये नौ प्रकार के लौकान्तिक देव हैं।

(d) 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्।' इस सूत्र का भावार्थ लिखिए।

उ. परस्पर के कार्य में निमित्त (सहायक) होना जीवों का उपकार है।

(e) 'तद्भावाव्ययं नित्यम्।' इस सूत्र का अर्थ लिखिए।

उ. जो अपने भाव (स्वभाव, जाति) से कभी अलग न हो, विनाश रहित हो, उसे नित्य कहते हैं।

(f) हिन्दी अनुवाद करो-

उ. 1. अहं उज्जाणं गच्छामि- मैं उद्यान में जाता हूँ।

2. वयं जिणं नमामो- हम सब जिन को नमस्कार करते हैं।

(g) ''गाढा य विवाग कम्मुणो।'' को समझाइये।

उ. कर्म विपाक गाढ है।

(h) प्राकृत वर्णमाला में कितने व कौनसे स्वर होते हैं ?

उ. प्राकृत वर्णमाला में आठ स्वर होते है। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ।

(i) संथारामरण व आत्म-हत्या में मुख्य अन्तर क्या है ?

उ. 1. संथारामरण-समभाव व विवेकपूर्वक ग्रहण किया जाता है, जिससे आत्मबल बढ़ जाता है।

आत्महत्या- अज्ञान व मोह से ग्रसित विषम भावों में की जाती है, जिससे आत्मबल क्षीण हो जाता है।

2. संथारामरण में देह का यथा समय घात होता है, पर आत्मघात नहीं होता।

आत्महत्या में देहघात के साथ आत्मघात (आत्मा की दुर्गति) भी होती है।

3. संथारामरण दण्डनीय कार्य नहीं। इसमें साधक शुभ और शुभ भावों में देह छोड़ता है।

आत्महत्या दण्डनीय अपराध है। इसमें जीव अशुभ भावों में देह छोड़ता है।

4.संथारामरण प्रकट रूप से देवगुरु धर्म की साक्षी से, बड़ों की आज्ञा से, सबके समक्ष विधिपूर्वक ग्रहण किया जाता है।

आत्महत्या छिपकर विवशता से किसी भी तरह कर ली जाती है।

5.संथारामरण सद्गति का कारण है जबकि आत्महत्या दुर्गति का कारण है।

6. संथारामरण में सबके प्रति क्षमा व मैत्री भाव होता है जबकि आत्महत्या में किसी न किसी के प्रति मरने वाले का आक्रोश होता है।

7.संथारामरण आयुष्य का अन्त निकट जानकर जीवन की अंतिम घड़ियों में यह निर्मल भावों से ग्रहण किया जाता है।

आत्महत्या कभी, किसी भी दशा में समस्याओं से घिरा हुआ, कलह में प्रवृत्त, आवेश आने पर कर ली जाती है।

(j) संख्यात गुण हीन-अधिक अवगाहना को उदाहरण से समझाइए।

उ. एक जीव की अवगाहना 125 धनुष की और दूसरे जीव की अवगाहना पाँच सौ धनुष की है। 125 को चार से गुणा करने पर 500 होते हैं। अतः पहले की अवगाहना संख्यात गुण हीन है और उसकी अपेक्षा दूसरे की अवगाहना संख्यात गुण अधि है।

(k) जीव पज्जवा के थोकड़े में द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा तुल्य क्यों कहा गया है ?

उ. कारण यह है कि द्रव्य से- तात्पर्य जीवों की गिनती से है। जिनकी आपस में तुलना की जा रही है। अर्थात् जिस जीव की, दूसरे जिस जीव से तुलना की जा रही है, वे दोनों संख्या में एक-एक ही है अतः द्रव्य से तुल्य कहा है।

(l) उत्कृष्ट स्थिति वाले मनुष्य की उत्कृष्ट स्थिति वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।

उ. द्रव्य से तुल्य। प्रदेश से तुल्य। अवगाहना से चतुस्थानपतित। स्थिति से तुल्य। बीस वर्णादि की

पर्यायों तथा छह उपयोग (2 ज्ञान, 2 अज्ञान, 2 दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3=(36)**

(a) **एवं भवसंसारे, संसरइ सुहासुहेहिं कम्मेहिं।**
जीवो पमाय बहुलो, समयं गोयम। मा पमायए।। इस गाथा का भावार्थ लिखिए।

उ. इस के अनुसार प्रमाद की अधिकता वाला जीव अपने पूर्वकृत शुभ-अशुभ कर्मो के कारण चतुर्गतिक जन्म-मरणरूप संसार में ;अनन्तकाल तक सततद्ध परिभ्रमण करता रहता है। (अतः) हे गौतम! समयमात्र का भी प्रमाद मत कर।

(b) **वोछिंद सिणेहमप्पणो, कुमुयं सारइयं व पाणियं।**
से सव्वसिणेहवज्जिए, समयं गोयम। मा पमायए।। इस गाथा का भावार्थ लिखिए।

उ. जैसे शरत्कालीन कुमुद (चन्द्र विकासी कमल) पानी से लिप्त नहीं होता, उसी प्रकार तुम भी अपने स्नेह–बन्धन को तोड़कर निर्लिप्त बनो। फिर सभी प्रकार के स्नेहबन्धन से रहित हो जाओ। हे गौतम! (इस कार्य में) समय मात्र का भी प्रमाद मत करो।

(c) **बुद्धस्सं निसम्म भासियं, सुकहियमट्ठपओवसुद्धं।**
रागं दोसं च छिंदिया, सिद्धिगइ गए गोयमे।। इस गाथा का भावार्थ लिखिए।

उ. अर्थ और पदों से सुशोभित, एवं सुकथित, सर्वज्ञ भगवान् महावीर की वाणी सुनकर, राग और द्वेष का क्षय करके, गौतमस्वामी सिद्धि–गति में पहुँचे।

(d) **निम्न की उत्कृष्ट कायस्थिति लिखिए-**

उ. 1. अप्काय- असंख्यात काल 2.चउरिन्द्रिय- संख्यात काल
3. वनस्पतिकाय- अनन्तकाल

(e) **सुदत्त अणगार को आते हुए देखकर सुमुख गाथापति ने क्या किया ?**

उ. अत्यन्त हर्षित और प्रसन्न होकर आसन से उठता है। आसन से उठकर पाद–पीठ–पैर रखने के आसन से नीचे उतरता है। उतरकर पादुकाओं को छोड़ता है। छोड़कर एक शाटिक–एक कपड़ा जो बीच से सिला हुआ न हो, इस प्रकार का उत्तरासंग (उत्तरीय वस्त्र का शरीर में न्यास) करता है; उत्तरासंग करने के अनन्तर सुदत्त अनगार के सत्कार के लिये सात–आठ कदम सामने जाता है। सामने जाकर तीन बाद आदक्षिण प्रदक्षिणा करता है, वन्दन करता है, नमस्कार करके जहाँ अपना भक्तगृह–भोजनालय था वहाँ आता है। आकर अपने हाथ से विपुल अशन पान का–आहार का दान दूँगा अथवा दान का लाभ प्राप्त करूँगा, इस विचार से अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त होता है। वह देते समय भी प्रसन्न होता है और आहारदान के पश्चात् भी प्रसन्नता का अनुभव करता है।

(f) **''द्विर्द्विर्विष्कम्भा पूर्वपूर्व प्रतिक्षेपिणो वलयाकृतय।'' सूत्र का अर्थ लिखिए।**

उ. वे सब द्वीप और समुद्र वलय (कंगन जैसी गोल आकृति वाले) पूर्व–पूर्व को वेष्टित करने वाले और दूने–दूने विष्कम्भ (व्यास) अर्थात् विस्तार वाले हैं।

(g) **12 देवलोकों के देव किस प्रकार विषय सुख का सेवन करते हैं ?**

उ. पहला दूसरा देवलोक के देव तो उक्त प्रथम तीन निकाय के देवों की तरह शरीर से विषय सुख भोगते हैं। तीसरे–चौथे कल्प के देव मात्र देवियों के स्पर्श से काम सुख का अनुभव करते हैं। पाँचवें–छठे कल्प के देव–देवियों के श्रृंगार सम्पन्न रूप को देखकर अपनी भोग की तृप्ति करते हैं। सातवें–आठवें कल्प के देवों की काम वासना देवियों के विविध कामुक शब्दों को सुनकर तृप्त हो जाती है। नवें से बारहवें तक के कल्पों के देवों की तृप्ति देवियों का मन से चिन्तन करने मात्र से हो जाती है।

(h) **तिर्यञ्च कौन हैं और वे कहाँ रहते हैं ?**

उ. औपपातिक अर्थात् देव और नारक तथा मनुष्य को छोड़कर शेष सभी संसारी जीव तिर्यञ्च होते हैं। तिर्यञ्च, लोक के सभी भागों में पाये जाते हैं, शेष सभी तीनों गतियों के लोक के विशेष भागों में ही पाये जाते हैं। तिर्यञ्च में एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक पाँचों जाति के जीव होते हैं। जिनमें बेइन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तो त्रस नाड़ी में ही होते हैं और एकेन्द्रिय पूरे लोक में व्याप्त होते हैं।

(i) **''भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषाः।'' इस सूत्र का अभिप्राय समझाइए।**

उ. चक्षु इन्द्रिय से दिखाई देने वाला स्कन्ध भेद और संघात दोनों से ही बनता है।

(j) **जघन्य स्थिति वाले पृथ्वीकाय के जीव की जघन्य स्थिति वाले पृथ्वीकाय के जीव से तुलना कीजिए।**

उ द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 20 बोल की पर्याय तथा तीन उपयोग की पर्याय की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(k) **अनेकान्तवाद का फल क्या होता है ?**

उ. अनेकान्तवाद का फलित यह है कि इससे सम्यग्ज्ञान होता है। मनुष्य में आग्रह बुद्धि नहीं आती। उसका चिन्तन हर तथ्य के विषय में उदार और व्यापक होता है। अपेक्षावाद से समन्वय करते हुए वह हर जगह तनाव को समाप्त कर देता है। अनेकान्तवाद वस्तु के सर्वांगीण ज्ञान का द्वार खोलता है और आग्रह से मुक्त करता है।

(l) **'लह' धातु के वर्तमान काल के रूप लिखिए।**

उ.

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्रथम	लहइ	लहन्ति
मध्यम	लहसि	लहह
उत्तम	लहमि	लहमो

कक्षा : दसवीं – जैन सिद्धान्त प्रभाकर उत्तरार्द्ध (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) उत्तराध्ययन के दसवें अध्ययन का नाम है -
(क) दुमपत्तयं (ख) दुमपुप्फिया
(ग) दुर्मतिया (घ) दुग्गच्छइ (क)

(b) 'निवडइ' शब्द का अर्थ है -
(क)गिर जाता है (ख) बढ़ता है
(ग) निवृत होता है (घ) नष्ट होता है (क)

(c) सुख विपाक सूत्र में अध्ययन हैं -
(क) 8 (ख) 10
(ग) 12 (घ) 15 (ख)

(d) नारकी जीवों को कितने प्रकार की वेदना भोगनी पड़ती हैं -
(क) एक (ख) दो
(ग) तीन (घ) चार (ग)

(e) देवों के कितने निकाय होते हैं -
(क) एक (ख) दो
(ग) तीन (घ) चार (घ)

(f) एक पृथ्वीकाय दूसरी पृथ्वीकाय से अवगाहना की अपेक्षा है-
(क) षट्स्थानपतित (ख) चतुःस्थानपतित
(ग) एकस्थानपतित (घ) द्विस्थानपतित (ख)

(g) नैरयिक जीवों के कितने अलावा होते हैं -
(क) 24 (ख) 98
(ग) 375 (घ) 93 (घ)

(h) एक पर्याय से दूसरी पर्याय में जाने वाला कहलाता है-
(क) द्रव्य (ख) गुण
(ग) पर्याय (घ) तत्त्व (क)

(i) 'प्राकृत प्रकाश' ग्रन्थ के रचयिता हैं-
(क) भामाह (ख) वररूचि
(ग) त्रिविक्रम (घ) हेमचन्द्राचार्य (ख)

(j) बोद्ध साहित्य में 'पाली' शब्द का अर्थ है-
(क) रेखा (ख)पंक्ति
(ग) बिन्दु (घ) सम (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) आकाश द्रव्य अनन्त प्रदेशी होता है। (हाँ)
(b) पंचेन्द्रियकाय में उत्पन्न हुआ जीव अधिकतम 10 भव तक वहाँ रहता है। (नहीं)
(c) उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन में कुल 35 गाथाएँ हैं। (नहीं)
(d) सुख विपाक सूत्र के दूसरे अध्ययन का नाम 'भद्रनन्दी' है। (हाँ)
(e) सुबाहुकुमार राजा अदीनशत्रु का पुत्र था। (हाँ)
(f) युगलिक मनुष्यों में अवधि ज्ञान नहीं होता है। (हाँ)
(g) मनुष्य के कुल 96 अलावा होते हैं। (नहीं)
(h) जो आत्मा है वही विज्ञाता है, जो विज्ञाता है वही आत्मा है। (हाँ)
(i) लक्ष्मीधर की वृत्ति का नाम षड्भाषा चन्द्रिका है। (हाँ)
(j) प्राकृत में शब्द के अन्त में प्रायः विसर्ग का प्रयोग होता है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मैं एक ऐसी गति हूँ, मुझमें उत्पन्न जीव अधिक से अधिक एक भव तक वहाँ रहता है। — देव या नरक

(b) मैं सबाहु कुमार का पूर्वभव हूँ। — समुख गाथापति

(c) मैं सौगन्धिका नगरी का राजा हूँ तथा जिनदास का दादा हूँ। — अप्रतिहत

(d) मैं एक ऐसा द्रव्य हूँ, जो अलोक में भी रहता हूँ। — आकाश द्रव्य

(e) वर्तना, परिणाम, क्रिया, परत्व और अपरत्व मेरे उपकार हैं। — काल

(f) मेरी उत्कृष्ट अवगाहना 500 धनुष की है। — सातवीं नारकी के नैरयिक

(g) मैं सभी धर्मों का प्राण और जैन धर्म का आधार हूँ। — अहिंसा

(h) मैं एक ऐसा वाद हूँ, जो वस्तु के सर्वांगीण ज्ञान के द्वार खोलता हूँ और आग्रह से मुक्त करता हूँ। — अनेकान्तवाद

(i) मुझे आगम भाषा एवं आर्य भाषा होने की प्रतिष्ठा प्राप्त है। — प्राकृत भाषा

(j) मैं हेमचन्द्राचार्य द्वारा रचित एक व्याकरण ग्रन्थ हूँ। — हेम प्राकृत व्याकरण

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2 = (28)

(a) परिजुरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से जिब्भबले य हायई, समयं गोयम। मा पमायए। गाथा का अर्थ लिखिए।

उ. तुम्हारा शरीर वृद्धावस्था के कारण अत्यन्त शिथिल हो रहा है और केश श्वेत हो रहे हैं और जीभ का वह सामर्थ्य अब कम हो रहा है, अतः हे गौतम! समय मात्र का भी प्रमाद मत करो।

(b) तिण्णो हु सि अण्णवं महं, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ।
अभितुर पारं गमित्तए, समयं गोयम। मा पमायए।। गाथा का अर्थ लिखिए।

उ. हे गौतम! तू महासागर (संसार महोदधि) को तो पार कर चुका है, अब इसके तट के निकट पहुँच कर क्यों खड़ा (स्थगित) हो गया ? इसे पार करने की जल्दी कर। समय मात्र का भी प्रमाद मत कर।

(c) दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिरकालेण वि सव्वपाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो, समयं गोयम। मा पमायए।। गाथा का अर्थ लिखिए।

उ. विश्व के समस्त प्राणियों को चिरकाल में भी मनुष्यभव दुर्लभ हैं और कर्मों का विपाक गाढ़ है। अतः हे गौतम! समयमात्र भी प्रमाद मत करो।

(d) लद्धूणवि उत्तमं सूइं, सद्दहणा पुणरवि दुल्लहा।
मिच्छत्त निसेवए जणे, समयं गोयम। मा पमायए।। गाथा का अर्थ लिखिए।

उ. उत्तम-धर्म का श्रवण (श्रुति) मिलने पर भी, फिर उस पर श्रद्धा होना और भी दुर्लभ है, क्योंकि बहुत-से लोग मिथ्यात्व का सेवन करने वाले होते हैं। अतः हे गौतम! समय मात्र का भी प्रमाद मत कर।

(e) सुमुख गाथापति के घर कौन-कौन से पाँच दिव्य प्रकट हुए ?

उ. उनके घर में सुवर्णवृष्टि, पाँच वर्णों के फूलों की वर्षा, वस्त्रों का उत्क्षेप (फेंकना), देव दुन्दुभियों का बजना तथा आकाश में 'अहोदान' इस दिव्य उद्‌घोषणा का होना- ये पाँच दिव्य प्रकट हुए।

(f) ''नाणोः।'' सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. अणु (परमाणु) के प्रदेश नहीं होते हैं।

(g) ''परस्परोपग्रहो जीवानाम्।'' सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. परस्पर के कार्य में निमित्त (सहायक) होना जीवों का उपकार है।

(h) ''गुण पर्यायवद् द्रव्यम्।'' सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. द्रव्य में गुण और पर्याय होते हैं।

(i) ''तत्कृतः कालविभागः।'' सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. घड़ी, पल आदि काल का विभाग इन्हीं चर ज्योतिष्कों द्वारा होता है।

(j) द्विस्थानपतित का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ. द्विस्थानपतित का आशय यहाँ असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन और असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिकों की स्थिति द्विस्थानपतित होती है।

(k) संख्यात भाग हीन से क्या तात्पर्य है।

उ. जब दो समान जीवों की तुलना आपस में करते हैं तब उनकी स्थिति, अवगाहना आदि में यदि दुगुने से कम अन्तर होता है तो उसे संख्यात भाग-हीन-अधिक ठाण (स्थान) कहते हैं।

(l) प्रत्येक जीव की पर्याय संख्यात, असंख्यात न होकर अनंत क्यों होती है ?

उ. प्रत्येक जीव की पर्याय संख्यात, असंख्यात न होकर अनंत होती है, क्योंकि एक-एक जीव वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शादि की अपेक्षा तथा मति, श्रुत ज्ञान आदि दस उपयोगों (केवल ज्ञान, केवल दर्शन को छोड़कर) की अपेक्षा अनन्त गुणी हानि-वृद्धि (तरतमता) हो सकती है। 24 दण्डकों के सभी जीवों की पर्याय अनन्त-अनन्त होती है।

(m) अनेकान्त शब्द को परिभाषित कीजिए।

उ. जिसमें अनेक अर्थ, भाव, सामान्य-विशेष गुण पर्याय रूप से पाये जायें, वह अनेकान्त है।

(n) निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

उ. तुमं गिहं गच्छसि। तुम घर जाते हो।
वीरो लेहं लिहइ। वीर लेख लिखता है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - 14x3=(42)

(a) मनुष्यत्व पाकर भी कौन-कौनसी घाटियाँ पार करना दुर्लभ है ?

उ. 1. आर्यत्व (आर्य देश में जन्म), 2. पाँचों इन्द्रियों की परिपूर्णता,
3. उत्तम धर्म का श्रवण, 4. धर्म पर श्रद्धा होना,
5. श्रद्धा के अनुसार आचरण होना।

(b) किन्हीं दो दृष्टान्तों से जीवन की क्षण-भंगुरता स्पष्ट कीजिए।

उ. 1. जैसे रात्रिगण के व्यतीत हो जाने पर वृक्ष का पका हुआ पीला पत्ता झड़ जाता है, इसी प्रकार मनुष्यों का भी जीवन एक दिन समाप्त हो जाता है। अतः हे गौतम! समय मात्र भी प्रमाद मत कर।
2. जैसे कुश के अग्रभाग पर टिकी हुई ओस की बूँद बहुत थोड़ी देर तक ठहरती है, वैसे ही मनुष्यों का जीवन है।

(c) मनुष्य भव की दुर्लभता का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उ. चार स्थावरों में असंख्यात काल तक, वनस्पति में अनन्त काल तक, त्रसकाय में-बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय चौरेन्द्रिय में संख्यात काल तक, पंचेन्द्रिय में- तिर्यञ्च में आठ भव तक, देवता-नारकी में एक-एक भव जन्म-मरण करने के पश्चात् मनुष्य भव की प्राप्ति होती है। अतः मनुष्य भव को दुर्लभ माना है।

(d) न हू जिणे अज्ज दिस्सई, बहुमए दिस्सई मग्गदेसिए।

उ. संपइ नेयाउए पहे, समयं गोयम। मा पमायए।। इस गाथा का भावार्थ लिखिए।
(भविष्य में लोग कहेंगे)- 'आज जिन (तीर्थंकर) नहीं दीख रहे हैं, और जो मार्ग निर्देशक हैं, वे भी अनेक मत के दीख रहे हैं। किन्तु आज (मेरी विद्यमानता में) तुझे न्यायपूर्ण- मुक्तिरूप मार्ग उपलब्ध है, अतः हे गौतम! समय मात्र का भी प्रमाद मत कर।

(e) सुबाहु कुमार के पूर्वभव का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उ. उस काल तथा उस समय में इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष में हस्तिनापुर नाम का एक ऋद्ध, स्तमित एवं समृद्ध नगर था। वहाँ सुमुख नाम का धनाढ्य, दीप्त यावत् अपराभूत गाथापति रहता था।

(f) मनुष्य क्षेत्र अढ़ाई द्वीप प्रमाण कैसे होता है ? समझाइए।

उ. जम्बूद्वीप, धातकी खण्ड तथा अर्द्धपुष्कर, इन अढ़ाई द्वीपों को अढ़ाई द्वीप (मनुष्य क्षेत्र) के नाम से

जाना जाता है। मानुषोत्तर पर्वत पुष्कर द्वीप के ठीक मध्य में है जिससे मनुषोत्तर पर्वत के पहले जो ढ़ाई द्वीप और दो समुद्र हैं उनमें ही मनुष्य की स्थिति है। इसलिये मनुष्य क्षेत्र अढ़ाई द्वीप प्रमाण होता है।

(g) **चौसठ इन्द्र किस प्रकार होते हैं ? स्पष्ट कीजिए।**

उ. देवों के चारों निकायों के कुल 64 इन्द्र होते हैं। भवनपति के दक्षिण दिशा के 10, उत्तर दिशा के 10, ये कुल 20 इन्द्र हैं। व्यन्तर निकार के उत्तर दिशा के 16 और दक्षिण दिशा के 16, ये 32 व्यन्तरों के इन्द्र हैं। ज्योतिषी के चन्द्र और सूर्य नामक दो इन्द्र हैं। वैमानिक के 10 इन्द्र है। इस प्रकार 20+32+2+10= 64 इन्द्र है।

(h) **सूत्र का उल्लेख करते हुए सत् का लक्षण लिखिए।**
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्तं सत्।

उ. जो उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य, इन तीनों से युक्त है, वही सत् है। संसार में सभी पर्दाथों में उत्पत्ति और विनाश पर्याय की अपेक्षा से तथा स्थिति-मूल गुणों की अपेक्षा से पायी ही जाती है। जैसे- सोने के कंगन को तोड़कर हार बनवाने में कंगन पर्याय का व्यय और हार पर्याय का उत्पाद हुआ। हार से कन्दोरा बनवाने में हार पर्याय का व्यय और कन्दोरा पर्याय का उत्पाद हुआ, किन्तु सभी अवस्थाओं (पर्यायों) में सोना तो विद्यमान (स्थित)है ही।

(i) **परमाणु को अप्रदेशी क्यों कहा जाता है ?**

उ. परमाणु पुद्गल का सूक्ष्मातिसूक्ष्म एवं अविभाज्य ऐसा अंश है, जिसका भी कोई दूसरा विभाग न किया जा सके, दूसरे अंश की कल्पना भी न हो सके, इस कारण उसे अप्रदेशी माना गया है।

(j) **षट्स्थानपतित का आशय उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।**

उ. वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के बीस बोलों के पर्याय की तथा दस उपयोग के पर्याय की अपेक्षा षट्स्थानपतित होते हैं। षट्स्थानपतित का आशय अनन्त भाग हीन, असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यातगुण हीन, असंख्यातगुण हीन, अनन्त गुण हीन और अनन्त भाग अधिक, असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक, असंख्यात गुण अधिक, अनन्त गुण अधिक से है।

(k) **मनःपर्यव ज्ञानी को स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित क्यों कहा गया है ?**

उ. मनःपर्यव ज्ञान चारित्रवान (संयमी मनुष्य) को ही होता है। चारित्रवान मनुष्य संख्यात वर्ष की आयु वाले ही होते हैं। चारित्र लगभग 9 वर्ष की उम्र के बाद ही ग्रहण किया जा सकता हैं। चारित्र की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त तथा उत्कृष्ट देशोन क्रोड़ पूर्व की होती है। इस कारण से मनःपर्यव ज्ञानी को स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित कहा गया है।

(l) **नारकी के एक नैरयिक की दूसरे नैरयिक से द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना एवं स्थिति के अनुसार तुलना कीजिए।**

उ. नारकी का एक नैरयिक दूसरे नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित (चउट्ठाणवडिया) है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा एवं नौ उपयोग (3 ज्ञान 3 अज्ञान 3 दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित (छट्ठाणवडिया) है।

(m) **हा (होना) क्रिया के वर्तमान काल के रूप लिखिए।**

उ.	पुरुष	एकवचन	बहुवचन
	प्रथम	होइ	होन्ति, होन्ते, होइरे
	मध्यम	होसि	होह, होहित्था
	उत्तम	होमि	होमो, होमु, होम

(n) 'जिण' शब्द की प्रथमा, तृतीया व चतुर्थी विभक्ति के रूप लिखिए।

उ.	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
	प्रथमा	जिणो	जिणा
	तृतीया	जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिं, जिणेहिँ
	चतुर्थी	जिणाय, जिणस्स	जिणाण, जिणाणं